॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे देव ! हे सखा! हे मित्र! तू इस संसाररूपी राष्ट्र का स्वामी है। इस राष्ट्र को शांतिदायक, महान और ऊँचा बना। विधाता ! यही नहीं हम संसाररूपी राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं। हम सबसे पूर्व चाहते हैं कि यह हमारा हृदयरूपी राष्ट्र है यह हर प्रकार से ऊँचा बना रहे। यह हमारी हृदयरूपी जो अयोध्या है इसमें वह राम विराजमान रहे जिस रामराज्य के ऊपर संसार व्याकुल होता चला जा रहा है। हे विधाता ! आज हम शरीर को वह अयोध्या चाहते हैं जिसमें रामराज्य हो जाये। हमारी यह अयोध्यारूपी नगरी ऊँची बन जाये और वह विधाता इस नगरी में ओत-प्रोत हो जाये। वह विधाता इस राष्ट्र का स्वामी बन जाये।

हे विधाता ! आज हम उस राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं जिस राष्ट्र में हमारा जन्म हो जो राष्ट्र देखो, हमारे शरीर का एक ऊँचा भाग हो। कैसे बनायेंगे? जब तक आपकी करुणा नहीं होगी, आपकी दी हुई प्रेरणा हमें नहीं मिलेगी। तब तक देखो हम इस संसार का, अपने शरीररूपी राष्ट्र का उत्थान किसी भी प्रकार नहीं कर सकते और न ही इसका निर्माण अच्छी प्रकार कर सकते हैं।

प्रभु ! हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते, संसार का कल्याण चाहते हैं। जब संसार में रहने वाले प्राणियों का हृदय अयोध्या के तुल्य बन जाये, रामराज्य सबके हृदय में रमण कर जाये, उस काल में मुनिवरो ! देखो, शांति का प्रदर्शन हो जायेगा।

–पूज्यपाद गुरुदेव

अंक : 499 समग्र अंक : 574
वर्ष : 42 समग्र वर्ष : 48

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	1
2.	अनुक्रम		2
3.	याज्ञिक	पूज्यपाद-गुरुदेव	3-18
4.	दैवी-यज्ञ	पूज्यपाद-गुरुदेव	19-21
5.	देवी-पूजा	पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी	22-23
6.	प्रकृति माता का सात प्रकार का अन्न	पूज्यपाद-गुरुदेव	24-28
7.	भिन्न-भिन्न यज्ञों के भिन्न-भिन्न देवता	पूज्यपाद-गुरुदेव	28
8.	Spiritual Lights	Pujyapad Gurudev	29-30
9.	दान, पुस्तकों की सूची व प्राप्ति के स्थान तथा सूचना आदि		31-40

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''संहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से प्रस्तुत है :-

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFS Code - PUNB-0014900

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) नई दिल्ली

॥ ओ३म् ॥

याज्ञिक

जीते रहो,

देखो मुनिवरो ! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। वह परमपिता परमात्मा आनन्दमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। तो वह परमपिता परमात्मा सीमा से रहित हैं और वह सीमा में आने वाले नहीं हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहते हैं। परम्परागतों से ही ऋषि मुनि अपने मन मस्तिष्कों को प्रायः एकाग्र करते हुए उन्होंने परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में अथवा उनकी प्रतिभा को अपने में लाने का प्रयास किया है और प्रायः करते रहे हैं। क्योंकि जब भी एकन्तस्थली में विचारक अपने में विद्यमान होते हैं तो वह उस परमपिता परमात्मा की महिमा का यशोगान गाना प्रारम्भ करते हैं और उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर प्रायः अन्वेषण करते हैं। तो इसीलिए आज का हमारा वेदमन्त्रः यज्ञनम् ब्रह्मा यज्ञ प्रव्हा लोकाः वेद का वाक् कहता है कि मानव

अपने में उस परमपिता परमात्मा का जो यह संसार रूपी यज्ञशाला है इसके ऊपर प्रायः हम विचार-विनिमय करते रहे हैं। आचार्यों का यह कथन रहा है क्या वह जो परमपिता परमात्मा है जो संसार रूपी यज्ञशाला का अपने में व्यवधान कर रहा है, अपने में इसे धारण कर रहा है उस धारयामि प्रभु को हमें विचारना है।

यज्ञ ही विष्णु है

आओ मेरे प्यारे ! आज का हमारा वाक् हमें उस आंगन के लिए प्रेरित कर रहा है। क्या यज्ञनम् ब्रह्मा यज्ञ प्रव्हे हमारे आचार्यों ने बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का आयोजन किया है और मानो देखो नाना प्रकार के यज्ञों का व्यवधान करने के पश्चात् उन्होंने यह कहा है यज्ञम ब्रव्हे विष्णु क्या यज्ञ अपने में विष्णु कहलाता है और विष्णु शब्द जो पालन करने वाला है। जैसे जो भी पालन करने के लिए मूल में आता है उसका नाम विष्णु है। इसीलिए यज्ञ भी हमारे यहाँ विष्णु के रूप में वर्णित किया गया है अथवा उसके ऊपर विचार-विनिमय करता रहा है! तो आओ बेटा ! आज मैं तुम्हें याग के ऊपर कोई विशेष विवेचना प्रगट करना नहीं चाहता हूँ केवल यह कि हमारे आचार्यों ने याग के ऊपर अपना बड़ा अनुसन्धान किया है और भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहा है।

त्रिवर्धा की विवेचना

वैदिक साहित्य कहता है त्रिवर्धनम् ब्रह्मा यह संसार त्रिवर्धा में रत्त रहने वाला त्रिवर्धा कहलाता है। मानो यह संसार तीन प्रकार के विभागों में विभक्त हो रहा है। पान करने वाला, रचाने वाला और जिसके द्वारा मुनिवरो ! सृष्टि रची जाती है वह त्रिवर्धा कहलाता है। जैसे ओ३म् की तीन मात्रा कहलाती हैं - अ उ और म् यह तीन मात्राओं में बेटा ! जितना भी अक्षर बोध है वह इसी के आश्रित रहता है। इसी प्रकार त्रिअम्ब्रणाम बेटा! भूः र्भुवः स्वः जब हम गायत्री छन्दों के पठन-पाठन में जाते हैं तो भूः र्भुवः स्वः यह तीन मानो देखो

व्याहृतियों का उद्गीत गाते हैं तीन व्याहृति उसमें वृणित कर देते हैं तो यह संसार तीन प्रकार की व्याहृतियों में व्यक्त हो रहा है तो तीन प्रकार का बेटा ! भूः र्भुवः स्वः यह तीन प्रकार का लोक माना जाता है और तीन ही प्रकार के मुनिवरो ! परमाणु होते हैं - तरलत्व, देखो गुरुत्व और तेजोमयी। इन तीन प्रकार के परमाणुओं के ऊपर बेटा! विज्ञान अपने में नृत कर रहा है। इसी प्रकार यह जो संसार की रचना होती है यह भी तीन प्रकार के रूपों में होती है। बेटा! एक रचाने वाला, एक रचने वाली वस्तु और एक मानो जिसके लिए रचाया जाता है। तो देखो भोगतव्य करने वाला आत्मा है और बनाने वाला वह चैतन्य देव है और मुनिवरो! देखो प्रकृति अपने आप में रचित कहलाती है, तो इसी प्रकार यह संसार त्रिवर्धा कहलाया जाता है। इसलिए यजशाला का जब यजमान भी अपने में निर्माण करता है तो तीन प्रकार की शैली बनाता है, तीन प्रकार की उसकी मेखला बनाता है और मेखला बना करके देखो भूः र्भुवः स्वः यह तीन मेखला के रूप में परणित होती हैं। इसी प्रकार मेरे प्यारे ! देखो यह तीन भागों में विभक्त होने वाला जगत अपने में अपनेपन का यशोगान गा रहा है। तो आज मैं बेटा ! त्रिवर्धा में विशेष चर्चा नहीं केवल यह कि परमपिता परमात्मा जो हमारा देव है, रचयिता है उसके ऊपर हम सदैव विचार-विनिमय करते रहें।

आओ मेरे प्यारे ! आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है यमम् ब्रह्मा यमम् ब्रव्हे क्रतम देवाय भूतम् ब्रह्मा—अग्नि यह जो अग्नि है अपने में महान कहलाती है। यह तेजोमयी है। इसी तेजोमयी को लेकर के अपने में व्यवधान होता रहता है। आओ बेटा ! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि-मुनियों का प्रायः अपने में विचार-विनिमय होता रहा है।

भगवान् राम का काल

मेरे प्यारे ! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है क्या भगवान् राम त्रेता के काल में बेटा ! देखो नित्यप्रति उनके यहाँ याग होता रहा

है और वह यागों में अपने में परणित रहे हैं। नाना ऋषि-मुनि अपने में स्थलियों को प्राप्त हो करके और अपने याग में अपने को ले जाने का उन्होंने प्रयास किया है। मेरे प्यारे ! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है जब प्रातः कालीन भगवान् राम अपनी प्रातःकाल की यज्ञशाला में देवयाग में परणित होते रहे हैं। तो देवयाग करते वह अपने में उद्गीत गाने वाले कहते हैं कि यज्ञम् ब्रह्मा हे राष्ट्रवेत्ताओं तुम्हारे राष्ट्र में ये मानो देखो यशोगान में होना चाहिए। तुम्हारा राष्ट्र यागमय होना चाहिए। जब राष्ट्र यागमय होता है, राजा जब याज्ञिक होता है तो यह मानो ये प्रजा भी याग में परणित हो जाती है। तो उन्होंने कहा यागाम् भविते ब्रह्मा हे प्रजाओं तुम याज्ञिक बनो और मेरे राष्ट्र में कोई गृह ऐसा न हो जिस गृह में याग न होता हो। मेरे प्यारे ! देखो भगवान् राम अपने में घोषित करते रहे हैं और कर्मवेत्ताओं को, राष्ट्रवेत्ताओं को अपना निर्णय देते रहे हैं कि तुम अपने राष्ट्र में यह घोषणा करो क्या तुम्हारे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में से सुगन्धि आनी चाहिए और वह **सुगन्धि क्या है?** मेरे प्यारे ! वह सुगन्धि है विचारों की सुगन्धि, वह सुगन्धि है साकल्य की सुगन्धि—वही अन्तरिक्ष को बेटा ! द्यौ मण्डल को ऊँचा बनाता है। मेरे प्यारे ! देखो जब मैं विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होता हूँ तो मुझे बेटा ! तत्व मुनि महाराज का आश्रम भी प्रायः स्मरण आता रहता है और जब मैं और गम्भीरता में जाता हूँ तो राम ने एक समय बेटा ! देखो अमृतम् विजय याग किया था। हमारे यहाँ यागों का प्रकरण कई प्रकार से यागों में परणित होता रहा है। मेरे पुत्रो ! देखो यागाम् भविते वर्णनं ब्रह्म यागः हे याज्ञिक तू आ और अपने प्रभु का अपने में ध्यानावस्थित हो करके अपने में साधक बन करके साधना में परणित हो जा।

मेरे प्यारे ! इस प्रकार वेद का मन्त्र कहता है क्या हमें याज्ञिक बनना चाहिए और प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए। यदि हम राष्ट्र और समाज और अपने गृह को ऊँचा बनाना चाहते हैं तो प्रत्येक गृह में देखो सुगन्धि होनी चाहिए। मेरे प्यारे ! महानन्द जी मुझे रूढ़िवाद

की प्रायः चर्चा प्रगट करते रहते हैं। एक मानव सुखद बनना चाहता है और सुखी बनने की उसकी प्रबल इच्छा है तो वह अपने में याज्ञिक बने अपनी प्रत्येक इन्द्रियों को याग में, साकल्य में ले जाए जिससे देखो उसकी प्रत्येक इन्द्रियाँ अपने में इन्द्रित होती हुई और वह अपने याग में परणित होता रहे। तो आओ मेरे प्यारे ! देखो भगवान् राम प्रातः काल उनके यहाँ याग होता और याग होने के पश्चात् उनका उपदेश प्रारम्भ होता और वह अपने उपदेश में यह कहा करते थे क्या हमें अपने राष्ट्र को प्रायः ऊँचा बनाना है तो प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए। प्रत्येक मेरी माता के हृदय से और वाणी से मन-मस्तिष्क को एकाग्र करते हुए अपने में याज्ञिक बने और वह उद्घोष करते रहे यागाम् भविते यागाम् दिव्यम् ब्रह्मा क्या हम अपने में याज्ञिक बने रहें। तो ऐसा मुनिवरो ! देखो भगवान् राम प्रातःकालीन अपने याग करने के पश्चात् उनका उपदेश प्रारम्भ होता और वह उपदेश में यह कहा करते शम्भु ब्रह्मणे रायम् अस्तुति देवत्वाम् द्रुव्हा ऐसा मानो देखो भगवान् राम का उपदेश प्रारम्भ रहता और वह यह कहा करते कि प्रत्येक राजा के राष्ट्र में वह अपने को ऊँचा बनाना राष्ट्र चाहता है तो राजा के राष्ट्र में सुगन्धि होनी चाहिए। राजा अपने में सुगन्ध, **विचारों की सुगन्धि बहुत अनिवार्य है। क्रियाकलापों की सुगन्धि बहुत अनिवार्य है** क्योंकि दोनों एक-दूसरे के पूरक वृत्तियाँ कही जाती हैं।

महर्षि वैशम्पायन महाराज का चिन्तन

मेरे प्यारे ! देखो वेद का वाक् कहता है सम्भव वृणमं ब्रह्मे क्रतम् देवाः क्या परमपिता परमात्मा का वह याग अपने में वह बड़ा प्रबल रहता है। आओ बेटा ! देखो मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब भगवान् राम प्रातः कालीन इस प्रकार का उपदेश देते रहे हैं। मेरे प्यारे ! देखो इसी उपलक्ष्य में महर्षि वैशम्पायन अपने में विचार-विनिमय करते रहे और महर्षि वैशम्पायन यह विचारते रहे क्योंकि वह उससे पहले दिवस में महाराजा अश्वपति के यहाँ वृष्टि

याग में से उनका पदार्पण हुआ और वह न्यौदा में से वेद-मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए अपने में उद्गीत गाने लगे परन्तु देखो अपने में निपटारा नहीं हो सका। तो मन्त्रों में आ रहा था चित्रम् देवाम् चित्रम् रथम् ब्रह्मा चित्रम् रथि क्रतम् देवत्वाऽम। मेरे प्यारे ! महर्षि वैशम्पायन अपने में यह विचार रहे थे कि मुझे मानो देखो अपने चित्रों को ले जाना है और चित्रों में दृष्टिपात करना है क्या यह यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक में कैसे जाता है। तो इसके ऊपर बेटा ! वह विचार-विनिमय करने लगे क्योंकि प्रत्येक शब्द के साथ में, स्वाहा के साथ में जब मेरे प्यारे ! देखो वेद-मन्त्रों की तरंगों के ऊपर वेद-मन्त्रों के एक संग में ओत-प्रोत हो करके द्यु लोक में प्रवेश कर जाती हैं। तो ऐसा मुनिवरो ! देखो उन्होंने अपने में व्यवधान, अपने में चिन्तन किया तो महर्षि वैशम्पायन चिन्तन में लग गये क्या यजमान के रथ को मैं कैसे दृष्टिपात करूँ। मेरे प्यारे ! देखो निन्द्रा की गोद में चले गये। मध्य रात्रि में पुनः जागरूक हुए तो उसी चिन्तन में लग गये और वेदमन्त्र कहता था यज्ञनम् ब्रह्मे यज्ञा ब्रव्हे अरत्तम् देवत्वाम् यज्ञमाना यजमान का चित्र बन करके द्यौ लोक में जाता है उसे मैं कैसे दृष्टिपात करूँ। तो मेरे प्यारे ! देखो महर्षि वैशम्पायन इस चिन्ता में लग गये परन्तु जब गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो गये बेटा ! रात्रि का ध्यान नहीं रहा वह समाप्त हो गयी। प्रातः दिवस आ गया तो महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज का एक आश्रम था। विभाण्डक मुनि महाराज ने अपने शिष्य व्रेतकेतु से कहा जाओ हे ब्रह्मचारी देखो ऋषि का, ऋषि ने अपने आसन को नहीं त्यागा है क्या कारण है? तो बेटा ! देखो व्रेतकेतु ऋषि महाराज भ्रमण करते हुए जब वह वैशम्पायन के द्वार पर पहुँचे। उन्होंने प्रणम ब्रव्हा क्रतम वह शान्त मुद्रा में मुद्रित थे। वह वहाँ से देखो ऋषि के द्वार पर आए। उन्होंने कहा प्रभु ऋषि चिन्तन में हैं और शान्त मुद्रा में मुद्रित हो रहे हैं।

महर्षि वैशम्पायन मुनि के आश्रम में ऋषि मुनियों का आगमन

मेरे पुत्रो ! देखो महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज ने अपने आसन

को त्यागा और त्याग करके जब ऋषि के द्वार पर जा पहुँचे तो ऋषि वर्णनं ब्रह्मा देवत्वाम् लोकाः। उन्होंने बेटा ! देखो अपने में अपनेपन को ध्यानावस्थित करने लगे तो मुनिवरो ! देखो अमृतम् ब्रह्मा वह भी चिन्तन में लग गये। तो चिन्तन में लग गये। कहीं से भ्रमण करते हुए बेटा ! देखो महर्षि वैशम्पायन के आश्रम में बेटा ! देखो ब्रह्मचारी महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलभ, महर्षि दालभ्य, महर्षि व्रेतकेतु और भी नाना ऋषिवर बेटा ! भ्रमण करते हुए कवन्धि इत्यादि उनके आश्रम में पहुँचे ! मेरे प्यारे ! देखो उन्होंने कहा ऋषिवर कैसे शान्त मुद्रा में हैं? उन्होंने कहा भगवन् एक वेदमन्त्र है और वेदमन्त्र के ऊपर अन्वेषण कर रहे हैं। वेदमन्त्र कहता है चित्रम् रथम् ब्रह्मा चित्रम् दिव्याम् देवत्वम् लोकाः—उन्होंने कहा कि चित्रम् देवम् ब्रह्मा कि मैं उस चित्र को दृष्टिपात करना चाहता हूँ जिस चित्र में मेरे यजमान का चित्र बन करके द्यु लोक में जाता है। उन्होंने कहा तो बहुत प्रिय। तो बेटा ! वह अपने में चिन्तन करने लगे परन्तु ब्रह्मचारी कवन्धि ने ये कहा क्या हे प्रभु ! यह वैसे विचार में नहीं आयेगा। देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ गमन करते हैं और उद्दालक मानो इसका निर्णय दे सकेंगे या एक याग का आयोजन किया जाए अयोध्या में, चलो वहाँ एक यज्ञ का आयोजन करेंगे और वहाँ यह सब वस्तु निर्णय हो जाएगीं। तो मेरे प्यारे ! देखो ब्रह्मचारी कवन्धि के वाक्यों को उन्होंने विचार का एक विषय अवृत किया वह अपने में विचार-विनिमय करने लगे। मेरे प्यारे ! मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है क्या विचार विनिमय करते हुए मुनिवरो ! सायँ काल का समय हो गया तो निर्णायक यह हुआ क्या यज्ञनम् ब्रव्हे क्रतम् देवो चलो शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ गमन करते हैं।

ऋषि मुनियों का शिकामकेतु उद्दालक मुनि के यहाँ प्रवेश

मेरे प्यारे ! देखो वह वैशम्पायन मुनि के यहाँ से उन्होंने गमन किया और वैशम्पायन ब्रह्मे देखो वह मुनिवरो ! देखो उद्दालक गोत्र में एक शिकामकेतु उद्दालक थे उनके द्वार पर पहुँचे। शिकामकेतु उद्दालक

ने ऋषि-मुनियों का स्वागत किया। क्योंकि हमारे यहाँ अतिथि सेवा का बड़ा एक अपना महत्त्व माना गया है। अपने में बड़ा महत्त्वदायक है। तो मुनिवरो ! देखो उनके द्वार पर पहुँचे अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् अमृतम् देवत्वम् ब्रहे वाचन्नमम् देवत्व प्रव्हा ऐसा वाक् उच्चारण करके बेटा ! शिकामकेतु उद्दालक मुनि ने कहा कहो भगवन् कैसे आगमन हुआ है? उन्होंने नाना प्रकार का अतिथि करने के पश्चात् अपना निर्णायक दिया कि कैसे तुम्हारा आगमन हुआ है? उन्होंने कहा प्रभु आज हम प्रातःकालीन न्यौदा में से मन्त्रों का अध्ययन कर रहे थे तो मन्त्रों में यह मन्त्र आया अमृतम् देवम् यज्ञमानम् ब्रव्हा देवत्वाम् चित्रो रथाः यजमान का चित्र बन करके द्यु लोक में जाता है। द्यु लोक वाले चित्र को हम दृष्टिपात करना चाहते हैं। उन्होंने कहा बहुत प्रिय, विराजमान हो जाओ। वह विराजमान हो गये।

यन्त्रों में द्यु-लोक के चित्रों का दर्शन

चिन्तन करने लगे तो उन्होंने बेटा ! कहा आओ, मेरे यहाँ नित्य प्रति याग होता है और मैं उसके ऊपर अनुसन्धान करता रहता हूँ। तो बेटा ! शिकामकेतु उद्दालक ने अपनी यज्ञशाला में नाना प्रकार की यज्ञशाला का उन्हें दृष्टिपात कराया। उन्होंने कहा यह मेरे यहाँ यज्ञशाला है यहाँ आत्मा के ऊपर चिन्तन होता रहता है और यहाँ आत्मा के ऊपर आत्मीयता का प्रायः मुझे दर्शन होता रहता है और मैं याग के ऊपर विचारता रहता हूँ। उन्होंने कहा धन्य है। देखो, प्रभु आपने कितनी गति की है इसमें? तो शिकामकेतु उद्दालक बेटा ! यन्त्र का निर्णायक देने लगे कि यन्त्र मेरे यहाँ इस प्रकार का है जहाँ मेरे पिता, महापिता, पड़पिता मानो मेरे महापिताओं के मुझे यन्त्रों में दर्शन होते हैं और वह यन्त्र मानो देखो यज्ञशाला का रथ बन करके ये यज्ञशाला में विद्यमान हो करके हम याग करते हैं। उनका रथ बन करके द्यु लोक में जाता है। तो प्रभु मैं द्यु लोक वाले रथ को सदैव दृष्टिपात करता रहता हूँ। तो मेरे प्यारे ! देखो उन्हें यन्त्र के द्वारा ले गये कि यह जो यन्त्र है इसमें यह विशेषता है क्या हम मानो देखो जब

विनिमय वेदमन्त्रों को विचार विनिमय में प्रारम्भ करते हैं, विज्ञान के वांगमय में ले जाते हैं तो मानो देखो यजमान का और यज्ञशाला का रथ बन करके अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यु में प्रवेश हो जाता है और वह द्यु में अप्रणम ब्रह्मा देवत्वाम् वह द्यु में परणित होता अपने में अपना व्यवधान करता रहता है। तो विचार आता है बेटा ! देखो उन्होंने अपना निर्णय दिया ऋषि ने क्या मेरे यहाँ नाना प्रकार के यज्ञशालाओं में एक यज्ञशाला में एक यन्त्र है **याज्ञिक यन्त्र** इसे कहते हैं जहाँ मेरे पिता, महापिताओं के चित्र आते हैं। मानो देखो वह चित्र रथ में विद्यमान हो करके द्यु में प्रवेश करते हैं। तो मेरे प्यारे ! देखो उनको नाना प्रकार के चित्र दृष्टिपात आने लगे। उन्होंने कहा हे ऋषिवर ! यह मेरे यहाँ नाना प्रकार का विज्ञानमयी देखो जीवन बनाया जाता है जो विज्ञान धाराओं को विचारने से यह प्रतीत हुआ है। तो मेरे पुत्रो ! देखो ऋषिवर अपने में शान्त होने लगे। ऋषिवर ने कहा धन्य है भगवन् आपने हमारे अज्ञान को प्रकाश और तरंगों में तरंगित करा दिया है। उन्होंने कहा हिरण्यम् ब्रह्मे लोकाम्। मेरे पुत्रो ! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है क्या मुनिवरो ! देखो यागाम् भविते शिकामकेतु उद्दालक ने नाना प्रकार के यन्त्रों को प्रायः दृष्टिपात कराया। दूसरे यन्त्र में उनके सौवें महापिता तक के चित्र प्रायः देखो यन्त्र में प्रवेश हो रहे थे। उन्होंने कहा यह चित्रावलियाँ आ रही हैं और यह चित्रावली मानो देखो याग से सम्बन्धित हैं। उन्होंने बेटा ! उनका बड़ा यशोगान गाया और वह अपने में मौन हो गये परन्तु नाना प्रकार के विज्ञान की आभाओं में रत्त हो करके ही बेटा ! मनमस्तिष्क में उसको ले जाने का उन्होंने प्रायः प्रयास किया।

मुनिवरो ! देखो आज मैं विशेष चर्चा इसमें प्रगट न करता हुआ केवल यह क्या मुनिवरो ! प्रत्येक मानव अपने में सुखद और आनन्द का प्रायः अनुभव करना चाहता है, उसी में रत्त रहना चाहता है। तो परमपिता परमात्मा आनन्दमयी है, परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है तो हमें उस देव की उपासना करते हुए उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर

अन्वेषण करते रहें। तो मेरे पुत्रो ! देखो यह ऋषि अमृतम् ब्रह्मा अपने में ब्रह्म का यशोगान गाने वाला है और यशोगान गाता हुआ अपने में महानता को प्राप्त होता रहा है।

विज्ञान की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई?

आओ मेरे प्यारे ! देखो मुझे स्मरण आता रहा है उन्होंने नाना प्रकार के यन्त्रों को दृष्टिपात कराया। अन्त में ऋषिवर अपने में मौन हो गये और मौन हो करके मुनिवरो ! देखो वह विराजमान जब हो गये तो उन्होंने, महर्षि व्रेतकेतु ने कहा प्रभु यह विज्ञान की उपलब्धि कहाँ से तुम्हें प्राप्त हुई है? क्योंकि तुम्हारा जो गोत्र है वह उद्दालक गोत्र कहलाता है और उद्दालक गोत्र यह जो गोत्र है यह बड़ा महान गोत्र रहा है, **यह प्रेरणा आपको कहाँ से प्राप्त हुई?** क्योंकि ब्रह्मा भी अपने में ब्रह्मयाग करने वाले हैं। विष्णु अपने में विष्णु याग करता है और देवताजन अपने में देवपूजा करते हैं और नाना प्रकार के अवयवों में रत्त हो करके वह यज्ञ में परणित हो जाते हैं। तो मेरे पुत्रो ! देखो जब उन्होंने इस प्रकार वर्णन किया तो सम्भूति ब्रह्मा सम्भूति लोकाम् सम्भूति वर्णनं ब्रह्मे लोका वर्चस्सुतह देवाः। तो मेरे प्यारे ! देखो मुझे स्मरण आ रहा है जब मुनिवरो ! देखो यागम् भविते तो शिकामकेतु उद्दालक ने कहा क्या मुझे जो यह प्रेरणा प्राप्त हुई है यह विज्ञान की और यागों की जहाँ देखो याग में नाना प्रकार का यन्त्रवाद मेरा द्यु-लोक में जाता है और यजमान का रथ बन करके मेरे पिता, महापिताओं का प्रायः मुझे दर्शन हो जाता है। मैं उन दर्शनों का प्रार्थी बना रहता हूँ। तो मुनिवरो ! देखो जब उन्होंने इस प्रकार का निर्णयक दिया, अपना निर्णय दिया तो वह अपने में मौन भी होने लगे परन्तु देखो इसी व्यवधान में अमृतम् उन्होंने कहा प्रभु आप तो मौन हो गये हैं। हम नहीं जान पाए हैं। हम यह जानना चाहते हैं यह प्रेरणा आप को कहाँ से प्राप्त हुई? क्योंकि तुम्हारा जो गोत्र है वह उद्दालक गोत्र कहलाता है और उद्दालक गोत्र के जितने भी ऋषि हैं सब ब्रह्मवेत्ता हुए हैं, वह विज्ञानवेत्ता नहीं हुए। वह तरंगेवेत्ता नहीं

हुए हैं। इसीलिए हम यह कहते हैं ब्रह्मा क्रतम् आप को यह प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई? क्योंकि आपका जो गोत्र है उद्दालक है, उस उद्दालक गोत्र में देखो मुझे स्मरण है क्या तुम्हारा यह मानो देखो एक सौ अस्सीवाँ वंश प्रारम्भ हो रहा है। परन्तु देखो इस गोत्र का जो निकास हुआ है वह हरितत गोत्रों से हुआ है और हरितत गोत्रों में लाखों वंश चले गये हैं उनमें भी कोई ऐसा विज्ञानवेत्ता नहीं हुआ। वह सब मानो तुम्हारे में ब्रह्मवेत्ता हुए हैं और देखो अमृतम् हरितत गोत्र का जो निकास है वह अंगिरस से हुआ है और अंगिरस गोत्र में भी लाखों वंशलज समाप्त हो गये। एक लाख पचास हजार के लगभग वंश चले गये हैं परन्तु उनमें कोई विज्ञानवेत्ता नहीं हुआ। वह सब देखो अपने में अपनेपन का व्यवधान करते हुए ब्रह्मवेत्ता हुए हैं। मेरे प्यारे ! अंगिरस गोत्र का जो निकास हुआ है वह हरिवर्णों से हुआ है। हरिवर्णों गोत्र जो हैं ये भी बड़े विचित्र हैं और हरिवर्णों गोत्र का जो निकास है वह ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से हुआ है। तो मानो देखो इनमें कोई ऐसा गोत्र नहीं है जिनमें लाखों-लाखों समय समाप्त हो गये हैं, लाखों वर्ष चले गये हैं परन्तु कोई ऐसा नहीं हुआ जो विज्ञानवेत्ता हो। वह सदैव ब्रह्मवेत्ताओं में अपनी निष्ठा, अपनी धारणा बनाते रहे हैं परन्तु कोई ऐसा नहीं हुआ जो भौतिक विज्ञान या परमाणुवाद के ऊपर अन्वेषण करने वाला हो। तो उन्होंने कहा कि **ब्रह्मा के पुत्र जो अथर्वा हुए हैं अथर्वा मानो देखो अपने में विज्ञान के युग में रहे हैं।** वह विज्ञान में परणित रहे हैं और विज्ञान मानो देखो अपने में उड़ानें उड़ता रहा है। तो मेरे पुत्रो ! देखो जब उन्होंने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया, अपना निर्णायक दिया, निर्णय दिया तो मेरे प्यारे ! अपने में ब्रह्मवर्ची शान्त हो गये।

शिकामकेतु उद्दालक मुनि को प्रेरणा पत्नि से प्राप्त हुई

मेरे पुत्रो ! देखो ब्रह्मम् ब्रहे ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से ले करके नाना वंशलज हुए हैं और नाना गोत्रों में सब ब्रह्मवेत्ता और यह प्रेरणा आपको कहाँ से प्राप्त हुई? तो उस समय शिकामकेतु उद्दालक ने कहा

क्या यह प्रेरणा मुझे मेरी पत्नी से प्राप्त हुई है। मेरी जो पत्नी है यह मानो देखो यह वायु गोत्रीय कहलाती हैं और वायु गोत्रों में यागों का बड़ा व्यवधान रहा है, निर्णायक रहा अपने में इसलिए मेरी पत्नी मुझे प्रेरित करती। मानो जब यह मेरे द्वार पर आईं तो उन्होंने मुझे यह प्रेरणा दी कि याग करें। तो हम याग में परणित हो गये मानो याग करते, याग के पश्चात् विज्ञानशाला में विज्ञान के ऊपर चिन्तन करते हैं और चिन्तन करके मानो देखो उसी से नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते रहे। हम जैसे स्वाहा किया जाता है तो अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यु में प्रवेश होता रहा है तो उसे **द्यु स्वाहा कह करके** अपने में याज्ञिक बने हुए हैं और प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बना हुआ है और याग के ऊपर अन्वेषण करता रहता है।

विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देखो अपने महापुरुषों का चित्रों में दर्शन करते रहे तो बेटा ! देखो विज्ञान अपने में इतना प्रबल और इतना मार्मिक माना गया है। तो इस प्रकार मुनिवरो ! देखो जो उन्होंने अपना निर्णय दिया। तो बेटा ! देखो अपने में महानता का दर्शन है। तो याज्ञिक बनना चाहिए—यज्ञोमयी विष्णु। तो वेद का मन्त्र कहता है कि चित्रम् रथम् ब्रह्मा वह चित्र बन करके द्यु-लोक में प्रवेश होता रहा है। उन चित्रों का हम प्रायः अपने में दर्शन करने वाले बनें। तो आज हम देखो, मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अब मेरे प्यारे ! महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्गारः

ओ३म् देवाम् भूवर्णनं ब्रह्मा वाचन्नमाः

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। जैसे सागर को गागर में भरण कराया जाता है तो इसी प्रकार वह ऐसी अलौकिक वार्ता प्रगट कर रहे थे। ऋषि-मुनियों का विज्ञान में जो जीवन रहा है उनका विज्ञान कितना मार्मिक और कितना प्रबल रहा है

क्या वह एक-एक मानो अपने पूर्वजों के चित्रों का दर्शन करते रहे। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, आज जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक याग का आयोजन हुआ और मेरा अन्तरात्मा यजमान के साथ रहता है। हे यजमान ! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे क्योंकि जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता है वह गृह महान होता है और द्रव्य मानो देखो याग जैसे क्रियाकलापों में जो परम्परागतों का यह क्रियाकलाप है। सृष्टि के प्रारम्भ से विचारक इसके ऊपर विचार-विनिमय करते रहे हैं, अपने में अन्वेषण करते रहे हैं।

प्रत्येक गृह में याग के लिए प्रेरणा

अब मैं विशेष चर्चा न देता हुआ आधुनिक काल का जो समय है इसे मैं वाममार्ग का समय कहता रहता हूँ। जहाँ सुरा सुन्दरी में और द्रव्य की लोलुपतता में मानव देखो अपने को ले जा रहा है, उसी में रत्त हो रहा है। यह वाममार्ग इसलिए क्योंकि उल्टे मार्ग पर गमन करने वाले को वाममार्ग कहा जाता है। तो आधुनिक काल में, वर्तमान के काल में मानो यह मैं विशेषता में नहीं ले जाऊँगा। कटुता में भी नहीं ले जाऊँगा। विचार-विनिमय क्या आधुनिक काल का प्रजा और राष्ट्र दोनों एक सूत्रों में सूत्रित हो रहे हैं। इसलिए राजा को चाहिए कि अपने राष्ट्र में देखो अपनी मानवीय पद्धति को अपनाने का प्रयास करे और मानवीय पद्धति वही जिससे जीवन में सुगन्धि प्रारम्भ हो जाए। जैसे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी राम का अपना उपदेश और राम की चर्चाएँ कीं। तो राजा, देखो राम के यहाँ प्रायः देखो अयोध्या राष्ट्र में, यह बहुत पुरातन काल में यह घोषणा थी कि क्या प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए, सुगन्धि होनी चाहिए। वह वेदमन्त्रों की सुगन्धि के ऊपर अग्नि की धारा विद्यमान हो करके द्यु में प्रवेश होनी चाहिए। तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव उन वाक्यों के ऊपर अपना विचार-विनिमय दे रहे थे।

प्रदूषण के कारण

परमात्मा का जो राष्ट्र है यह अनन्त है। इस अनन्तमयी राष्ट्र

में अपने विचारों को याग में ले जाएं, सुगन्धि में ले जाएं जिससे प्रदूषण समाप्त हो जाए क्योंकि वर्तमान के काल में इतना प्रदूषण आ गया है क्या अबसे कुछ समय के पश्चात् मानो देखो श्वांस लेने में भी मानव अपने में देखो दुखित होता रहेगा और श्वांस लेते ही मृत्यु भी हो सकती है। ऐसा मानो देखो प्रदूषण इस संसार में परणित हो गया है और प्रदूषण के दो कारण हैं। उनके कारणों में मानो देखो अशुद्ध वाक् उच्चारण करना और उनके रहन सहन की, खान-पान की पद्धतियाँ भ्रष्ट होने से मानो प्रदूषण का जन्म होता है और वह इस प्रकार का होना चाहिए। हमारा विचार, हमारा अन्नाद भूतम् पवित्र होना चाहिए। हम मानो देखो दूसरे के रक्त को जब हम पान करने में और सुरा में लगे रहते हैं तो उससे प्रदूषण का जन्म होता रहता है, यह प्रदूषण नहीं होना चाहिए। हमारा आहार और व्यवहार, हमारा जीवन पवित्रता में, पवित्रता की आभा में रत्त हो जाए।

राष्ट्र और राजा के लिए संदेश

एक मुझे यह वाक् उच्चारण करना है—प्रदूषण यह जो नाना प्रकार के ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बनी हुई है। कोई मोहम्मद के मानने वाला है, कोई ईशा के मानने वाला है, कोई नानक के मानने वाला है परन्तु देखो एक-दूसरे के विचारों में रक्त भरी क्रान्ति का संचार आ रहा है। तो वह जो विचार है वह दूषित वायुमण्डल को जन्म देते हैं इसीलिए देखो एकोकी विचार राजा का कर्त्तव्य है क्या दार्शनिक बनकर के राजा अपने राष्ट्र में दार्शनिकता का प्रसार करे जिससे मानव की वाणी पवित्र हो जाए, मानव का रहन, विचार पवित्र हो जाए। आहार पवित्र हो जाए और यह रूढ़िवाद विचारों का समाप्त हो जाए। एकोकी धर्मम् ब्रह्मा यह मानव की इन्द्रियों में जो धर्म है उसको विचार करके मानव को ग्रहण करना चाहिए और राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाए तो देखो यही राजा का कर्त्तव्य है। पुरातन काल में जब राष्ट्र का निर्माण हुआ तो भगवान् मनु ने सबसे प्रथम राष्ट्र का निर्माण करते उन्होंने कहा है

क्या राजा को चाहिए कि धर्म मानवीय पद्धति में लाने का प्रयास करे, इसीलिए राष्ट्र का जन्म होता है। राष्ट्र का जन्म इसलिए नहीं होता कि धर्म की अवहेलना की जाए और धर्म कहते किसे हैं—जो मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है। **इन्द्रियों का दृष्टिपात करना ही वही धर्म है।** उसको विचारना ही राष्ट्र का कर्त्तव्य है और नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नहीं रहनी चाहिए। यह रूढ़ियाँ राष्ट्र के लिए घातक हैं, मानो समाज के लिए घातक हैं और यही मानो देखो प्रदूषण को जन्म देती रहती हैं। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि मेरा अन्तरात्मा यजमान के साथ रहता है। हे यजमान ! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरी मानवीयता अपने में पवित्रता को धारण करती रहे।

आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ—मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने विज्ञान के वांगमय में प्रवेश हो करके और चित्रों का उन्होंने दर्शन कराया है। हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे शिकामकेतु उद्दालक मुनि की यज्ञशाला में हम विद्यमान हैं और अपने में अन्वेषण कर रहे हैं, विचार-विनिमय कर रहे हैं। तो आज का विचार क्या कि हे यजमान तेरा जीवन, तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। गृह में जितना भी द्रव्य का सदुपयोग होता है उतना गृह उन्नत बनता है और गृह में जितना दुरुपयोग द्रव्य का हो जाता है, सुरा में, सुन्दरी में अवृत हो जाता है तो वही व्यर्थ जाता है और वह राष्ट्र में गृह को ऊँचा न बना करके निचरली स्थलियों पर ले जाता है।

आज का विचार-विनिमय क्या मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह क्या राष्ट्र को ऊँचा बनना है तो राजा को चाहिए कि रूढ़िवाद को नष्ट करने वाला हो और अब एकोकी धर्म मानवीयता को जन्म देने वाला राजा होना चाहिए जैसा भगवान् मनु का अपना मन्तव्य रहा है। स्वर्गरश्चम् ब्रहे वह स्वर्ग को लाने का समाज में प्रयास करें। **भगवान् राम की यह घोषणा रही** क्या मेरे राष्ट्र में, प्रत्येक गृह में याग और सुगन्धि होनी चाहिए। **विचारों की सुगन्धि**

के लिए प्रथम उन्होंने स्थान दिया है। द्वितीय स्थान साकल्य की सुगन्धि के लिए दिया है। तृतीय स्थान संगतिकरण के लिए दिया है क्या हम एकत्रित हो करके अपने विचार-विनिमय करते रहें, विचारों में महानता को लाने का प्रयास करें। तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा और आज्ञा पाने से पूर्व हे यजमान ! तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। गृह में उन्नतम् ब्रह्मा देवत्वाम् जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तो आज का यह वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर ! अभी-अभी मेरे प्यारे ! महानन्द जी ने अपना मन्तव्य दिया। इनके प्रति राष्ट्र के प्रति इनके हृदय में कितनी दाह बनी रहती है कि यह राष्ट्र, समाज और राजा को महान बनना चाहिए और राजा के जीवन में त्रुटियाँ नहीं होनी चाहिए। ब्रह्मज्ञान का स्रोत होना चाहिए। यह प्रायः देखो मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी के हृदय में जो दाह वही शब्द हैं, वह द्रव्य के प्रति कितनी आभा वृत्तियाँ हैं क्या द्रव्य का सदुपयोग हो मानव के जीवन में महानता वाणी की हो और जीवन अपने में परमपिता परमात्मा से सुगठित हो। तो यह आज वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् मनुरथम् वाचन्नमाः
ओ३म् रथम् ब्रह्म वसु आभ्याम् देवम् यममायाः
ओ३म् यशचाहम् वाचन्नमाः
अच्छा भगवन् !

दिनाँक : 20 सितम्बर, 1992
समय : सुबह 10.30 बजे
स्थान : खुर्मपुर-सलेमाबाद
गाजियाबाद

॥ ओ३म् ॥

दैवी-यज्ञ

हमारे यहाँ नाना प्रकार के याज्ञों का प्रायः वर्णन आता रहता है। आज मैं दैवी यज्ञ के सम्बन्ध में अपना संक्षिप्त परिचय देना चाहता हूँ। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही दैवी यज्ञ होता रहा है। परन्तु यज्ञ का अभिप्रायः क्या है? उसकी दो प्रकार की रूप रेखा है एक भौतिक है, दूसरी आध्यात्मिक है। परन्तु भौतिक जो यज्ञ है उसका वर्णन किए देता हूँ। संक्षिप्त परिचय देना हमारा कर्त्तव्य है। बेटा ! भौतिक यज्ञ में यजमान विराजमान होता है, वह दैवी यज्ञ के लिए तत्पर होता है। मुनिवरो ! देखो, दैवी यज्ञ का अभिप्रायः है दैविक विचारधारा को और मानव पर जो दैविक आपत्ति आती है उसको शान्त बना देने के लिए बेटा ! वह यज्ञ किया जाता है। प्रकृति से जितना कष्ट होता है उसे दैविक कहते हैं। प्रभु से याचना की जाती है कि प्रभु यह आपत्ति हमें नहीं चाहिए। मानो हमारे जीवन में यह प्रकृति शान्त भाव से रमण करती रहे। यही मानो 'आवाभ्रवे' यह जो प्रकृति है यह संसार का उपकार आप के द्वार पर होता रहे। ऐसा बेटा ! विचार है। हमारे यहाँ यह यज्ञ का अभिप्रायः है। यह दैवी-यज्ञ—दैविक जो आपत्तियाँ आती हैं दैविक अर्थात् आधिदैविक, आधिभौतिक, मानव पर आपत्तियाँ आती हैं ये नहीं आनी चाहिए। ऐसी कामना के साथ अनुष्ठान किया जाता है। मुनिवरो ! उस अनुष्ठान की बहुत ही ऊँची उड़ान रहती है।

परन्तु अभिप्राय यह कि इसको अनुष्ठान कहते हैं। अनुष्ठान की उड़ान कितनी विचित्र है? उस उड़ान के ऊपर मानव को विचार-विनिमय करना चाहिए। मुझे स्मरण है माता अनुसुइया अनुष्ठान पूर्वक यज्ञ करती रहती थीं। यज्ञ का अभिप्राय यह यज्ञ

करना। यज्ञ किसे कहते हैं? (दैवी यज्ञ कैसा माना गया है?) **हमारे यहाँ 15 प्रकार के यज्ञ माने हैं। 84 प्रकार की यज्ञशालाएँ होती थीं।** इनमें लगभग 15 प्रकार की यज्ञशालाएं मुख्य मानी हैं। एक चतुष्कोण यज्ञशाला होती है। एक त्रिकोण होती है, पंचकोण होती है, सप्तकोण होती है। परन्तु **जो दैवी यज्ञ करने वाले होते हैं जो देवी के कर्मकाण्ड को जानते हैं वह सप्त जिह्वा वाली यज्ञशाला का निर्माण करते हैं। क्योंकि अग्नि की सप्त जिह्वायें हैं, सप्त जिह्वाओं के आधार पर सप्तम् प्रकार की कोणों वाली यज्ञशाला बनाई जाती है।** जिस प्रकार बेटा एक वैज्ञानिक जो परमाणुओं का मिलान करना जानता है। वह निर्माणवेत्ता निर्माण करने लगता है और उसी प्रकार का वह निर्माण करता है। विषैली जो वायु है उसका संचार वायु-मण्डल में प्रसारित हो जाए ऐसा विचार रहता है। इसी प्रकार यज्ञशाला का निर्माण होता है।

चैत्र मास में प्रभु के उपासक दैवी-यज्ञ किया करते थे

मैं अवैदिकता की चर्चा नहीं करता। हमारे यहाँ जो वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है उसकी चर्चा करता हूँ। जब सप्तकोण की निर्माणशाला बनाई जाती है यज्ञशाला निर्माणशाला को दोनों रूपों में परणित किया गया है। उसमें 'अप्रतम्' पश्चिम जो भाग है उसमें लगभग तीन जिह्वा आ जाती हैं। अहा उनके आधार पर ही उस आसन पर यजमान विराजमान होता है। पत्नी सहित अनुष्ठान संकल्प करता है। अग्नि के समीप विराजमान हो करके संकल्पवादी बनता है। **यज्ञ का अभिप्राय है संकल्प। यज्ञ का अभिप्राय है सुगन्धि देना इस संसार को, दैवी यज्ञ का अभिप्राय है कि जो चैत्र मास में होता है** जैसा मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी प्रेरणा दे रहे हैं। इसमें जो दैवी यज्ञ होते हैं उसमें सप्तकोण की यज्ञशाला का निर्माण होता है और यजमान पत्नी

सहित विराजमान हो करके यज्ञ करता है। **सबसे प्रथम ज्योति को जागरुक करता है। ज्योति को जागरुक करके उस प्रभु से याचना करते हुए वह प्रभु की गोद में जाने का प्रयास करता है।** परन्तु प्रभु की उपासना करते हुए महत्ता वाली ज्योति का जागरुक करने वाला जो यजमान है वह दैवी याज्ञ करता है। तो बेटा ! अभिप्राय यह कि वह जो सप्तकोण की यज्ञशाला है उसमें जो सुगन्धि उत्पन्न होती है, उसमें जो तरंगें उत्पन्न होती हैं, वह बेटा इस पृथ्वी को प्राप्त हो जाती हैं। मानो पार्थिव जो तत्व हैं उन्हीं को वह प्राप्त हो जाती हैं। प्राप्त होने का अभिप्राय यह कि जो नाना प्रकार की वनस्पतियाँ इस पृथ्वी पर, वसुन्धरा के गर्भ में शुद्ध रूप से परिपक्व हो जाती हैं उसमें सुगन्धि प्रदान की जाती है।

अखण्ड-ज्योति

मेरे प्यारे ऋषिवर ! मैं इसलिए उच्चारण कर रहा हूँ यज्ञशाला में ब्रह्मा को सुन्दर चुना जाता है। उद्गाता होता है। एक अध्वर्यु होता है, और होताजन हों, जिनको ऋत्विज कहते हैं। बेटा ! जो यज्ञशाला में अग्नि प्रदीप्त हो रही है **हमारे यहाँ ऋषि-मुनि, आचार्य द्वारा राष्ट्र गृहों में यह अग्नि मुनिवरो सहस्त्रों सहस्त्रों वर्षों से प्रदीप्त होती रही है। इसका अभिप्राय यह कि अखंड ज्योति जो अग्नि है यह कदापि यज्ञशाला से शान्त नहीं होनी चाहिए।** वह जो यज्ञवेदी है उस यज्ञवेदी का अभिप्राय यही है कि अखंड ज्योति है। अखंड अग्नि गौ धृत को लेकर के, जो सुगन्धि करता है, अशुद्ध परमाणुओं को नष्ट करता है। वातावरण उस ही के द्वारा पवित्र होता है। आज हमें उस यज्ञ के ऊपर प्रायः अनुसन्धान करना चाहिए।

–पूज्यपाद गुरुदेव

॥ ओ३म् ॥

देवी पूजा

देवी की पूजा का यहाँ नाना प्रकार के भवनों ने बहुत ही अपमान किया, भवन अधिक संख्या में हो गए, राष्ट्र में भी इसके विनाश का मूल कारण बना। इसी प्रकार यह जो अशुद्ध परम्परा थी ऊब करके दूसरे सम्प्रदावादी बने। सत्सनातन धर्म की मानवता, वैदिक-परम्परा को मानव ने दूर कर दिया। क्योंकि संसार में ज्ञान न रहा। **ज्ञान का अधूरापन आ जाने के कारण संसार में रुढ़ि बनती है** और वह रुढ़ि विनाश का कारण बनती हैं। वह रुढ़ि घातक बन करके इसके जीवन को नष्ट करने वाली बन जाती हैं। मुझे स्मरण रहता है जब राष्ट्रवाद में नाना प्रकार की रूढ़ियाँ होती हैं। एक सम्प्रदाय से रुढ़ि का निकास हुआ है। परन्तु कोई समय आता है जब वह उनकी सम्प्रदाय की इच्छाएँ पूर्ण नहीं होती तो वह रुढ़ि जहाँ से उत्पन्न हुई तो उसी को निगलने वाली बन जाती है। आज उससे राष्ट्र और समाज दोनों का विनाश होता जाता है। इसीलिए मैं अधिक विवेचना प्रकट नहीं करूँगा। मैं तो केवल संक्षिप्त अपना परिचय देना चाहता हूँ। विचार देने आया हूँ कि आज हम देवी की पूजा करने वाले बनें। परन्तु इसका नाम देवी पूजा नहीं है। **''देवी पूजा का अभिप्राय है अपने आचरणों को पवित्र बनाया जाए और यज्ञ किया जाए।''**

यज्ञ प्रकृति देवी की पूजा है। भगवान् राम के यहाँ यज्ञ की अग्नि अखण्ड रूप से जलती थी।

प्राचीन प्रथा है कि **सतयुग के काल से चैत्र-मास में प्रतिपादन से लेकर के अष्टमी तक यज्ञ रहता था।** यहाँ वेदों के नाना पठन-पाठन होते और यज्ञशाला में क्रम चलता, राष्ट्र का ध्वनिमय हो जाता था। वह समय मुझे स्मरण है जब भगवान् राम लंका को विजय करके आए तो उन्होंने देवी-यज्ञ किया। यज्ञ क्या किया उनके यहाँ **एक वर्ष में दो समय देवी की पूजा की जाती थी।** ये दोनों समय ऐसे हैं जिसमें पृथ्वी के गर्भ में बीज की

स्थापना की जाती है। एक यज्ञ में कृषि के गर्भ से नाना प्रकार की वनस्पतियों का अन्न उत्पन्न हो करके गृह में आता है। तो उस समय प्रत्येक गृह में यज्ञ होने चाहिएं। जब प्रत्येक गृह में यज्ञ होते हैं तो वह प्रकृति माता की पूजा है, देवी की पूजा है परन्तु वही तो हमारे यहाँ अखण्ड-ज्योति है। **भगवान् राम का जीवन मुझे स्मरण है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कहा करते हैं कि उन्होंने जब से राष्ट्र स्थापित किया और मृत्यु तक उनके गृह से यज्ञमयी ज्योति का विनाश नहीं हुआ, वह यज्ञ ज्योति, यज्ञ की अग्नि उनकी यज्ञशाला में सदैव प्रदीप्त रहती थी, यज्ञ होते रहते थे।** तो राष्ट्र और समाज उस काल में ऊँचा बना करता था। क्योंकि इनका सम्बन्ध राष्ट्र के और समाज के ऊपर बहुत ही गम्भीरता से अपना प्रभुत्व निर्धारित करता है। इसीलिए इन विचारों को मैं देने आया हूँ कि यज्ञ होने चाहिए। जितने यज्ञ होंगे उतना राष्ट्र और वायु-मण्डल ऊँचा बन जाएगा।

यज्ञ अहिंसामय होते हैं

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव इस देवी-यज्ञ के सम्बन्ध में देवी की विवेचना करते हुए ये नाना विचार देते रहते हैं। इनके विचार बहुत गम्भीर रहते हैं। मेरा विचार तो इतना गम्भीर नहीं। परन्तु जहाँ यज्ञों में मांसों की स्थापना की जाती है वे यज्ञ नहीं। अरे ! **यज्ञ तो दूसरों की रक्षा करने के लिए होते हैं।** यज्ञ दूसरों को नष्ट करने नहीं आते सँसार में। इसीलिए देवी तो पालना करती है। देवी किसी का भक्षण नहीं करती सँसार में। हाँ देवी उस काल में भक्षण करती है जब उसके सतीत्व पर कोई आक्रमण करता है। उस समय देवी चण्डी बन जाती है। वह देवी रुद्र का रूप धारण कर लेती है। माँ काली बन करके वह उस मानव को नष्ट कर देती है। इसीलिए आज हम उस महामना देवी की याचना करने वाले बनें। वह देवी क्या है? वह माता है जिसके गर्भ से मानव का जन्म होता है। जिस गृह में माता का निरादर किया जाता है वह गृह आज नहीं तो कल नष्ट हो जाएगा, जिस राष्ट्र में इस प्रकार की भावना है वह राष्ट्र नष्ट हो जाते हैं।

–पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी

॥ ओ३म् ॥

प्रकृति माता का सात प्रकार का अन्न

आज मैं वाक्य उच्चारण क्या कर रहा था कि आज हमें उस प्रकृति के गर्भ में जाना है। इस वसुन्धरा के गर्भ में नाना प्रकार के खाद्य और खनिज उत्पन्न होते हैं। यह प्रभु की कैसी विचित्रता है। माँ तू संसार में कैसी वस्तु प्रदान करती है। जो नाना अन्न है जिन्हें खाद्य कहते हैं। ये अन्न सात प्रकार के कहलाए गए हैं। एक अन्न वह है जो सबका **साझा अन्न है।** जिस अन्न को माता अपने भोजनालय में तपाती हैं। अग्नि में तपायमान कर देती है, वह सबका साझा अन्न होता है, उसी का दूसरा भाग जो अन्न है वह पशुओं को प्रदान कर दिया जाता है मेरे प्यारे प्रभु की कितनी विचित्रता है। हे रचनाकार ! तू कितना वैज्ञानिक है। मुनिवरो ! **जैसा जिसका उदर होता है उसी प्रकार का उसका अन्न होता है।** यह कैसी विचित्रता है उस मेरे प्यारे प्रभु की। मुनिवरो ! वह जो यज्ञ हो रहा है वह कितना विशाल है। बेटा, जब हम यह विचारने लगते हैं।

प्रभु ने संसार में सात प्रकार के अन्न की रचना की है, सात प्रकार के खाद्य दे दिए हैं प्राणीमात्र के लिए। मुनिवरो, देखो एक अन्न तो सबका साझा है दूसरा अन्न पशुओं को प्रदान कर दिया, पशु पाकर के उसको दुग्ध देते हैं। धृत प्रदान करते हैं उससे बेटा याज्ञिक पुरुष यज्ञ किया करते हैं। इसी प्रकार **तृतीय अन्न हुत कहलाया गया है। हुत का अभिप्राय आहुति देना है।** हे ब्राह्मणों, हे यजमान ! तू आहूति दे। **हे यजमान आहुति के साथ-साथ तेरे विचारों की गति सूर्य-मण्डल में जाने वाली हो।** ऐसा वेद का पाठ कह रहा है। वेद का ऋषि कह रहा है। मुनिवरो ! देखो, वहाँ तक जाने का तुम प्रयास करो। इसकी उड़ान होनी चाहिए। राजा के राष्ट्र में, विज्ञानशाला में और मुनिवरो यज्ञशाला में भी यजमान की ऊँची

उड़ान होनी चाहिए। इस पृथ्वी से लेकर के सूर्य-मण्डल तक रमण करने वाला हो। मुनिवरो, **सूर्य क्या है?** सूर्य अग्नि प्रधान एक गृह कहलाया गया है जिसमें अग्नि तत्व प्रधान है। बेटा, जो आत्मवेत्ता पुरुष होते हैं वह जानते हैं कि इस **आत्मा को अग्नि कदापि शान्त नहीं कर सकती, इस सूक्ष्म-शरीर को अग्नि भी अपने में ग्रहण नहीं कर सकती।** तो मेरे प्यारे ऋषिवर, विचार यह है कि आज हमारी इतनी उड़ान इस यजवेदी पर होनी चाहिए।

हमारे ऋषि मुनियों ने सात प्रकार के अन्न की विवेचना की है। **हुत होता है जो देवताओं को प्रदान किया जाता है। तृतीय अन्न जिससे देवताओं की पूजा होती है।** बेटा ! देवता कौन है। देवता यह प्रकृति है। देवता वह कहलाया गया है जैसे जल, अग्नि, वायु है, **पंच महाभूत जो हैं ये देवता कहलाए गए हैं।** इन देवताओं का पूजन होता है, इन देवताओं को अन्न प्रदान किया जाता है। जब यजमान आहुति देता है उसका दूत कौन है? **वह अग्नि देवताओं का दूत बन कर के प्रत्येक देवता को सुगन्धि प्रदान कर देती है।** तो उसमें बल और शक्ति प्रदान हो जाती है उस शक्ति को प्रदान करता हुआ मानव अपने जीवन को बेटा अग्रणीय बनाता चला जाता है।

मेरे प्यारे ऋषिवर ! आज मैं अधिक विवेचना देने नहीं आया हूँ, केवल संक्षिप्त परिचय देने आया हूँ। **मुनिवरो हुत और प्रहुत कहते हैं पुरोहितों की सेवा करने का। पुरोहित कौन है? जो यजमान को पराविद्या प्रदान करते हैं और ये कहते हैं कि हे राजन् ! आज तू पराविधा को धारण कर।** हे यजमान ! तू पराविद्या को ले। वह चैतन्य देवता कहा जाता है, वह बुद्धिमान है। जिनको ब्राह्मणजन कहा जाता है। उनको पुरोहित कहा जाता है। वह प्रहुत कहलाते हैं। उनको दिया जाता है। वह **चतुर्थ प्रकार का अन्न** कहलाया गया है। वह जो अन्न है, वह अन्न मुनिवरो देखो जो

ब्राह्मण को दिया जाए। विद्या भी इसी के गर्भ में होती है। क्योंकि बुद्धिमान को दिया हुआ जो पदार्थ है, द्रव्य है वह प्रहुत कहलाता है। प्रहुत इसलिए कहलाया गया है कि वह पुरोहित बनकर के इस संसार को सुन्दर बनाता है और यजमान को ऊँचा बनाता है।

परमात्मा ही यथार्थ में पुरोहित हैं

राजा घोषणा करता है वैदिक-साहित्य के आधार पर, वह यजमान को पत्नी सहित ऊँचा बनाने का प्रयास करता है। वह पुरोहित कहलाया गया है जो पराविद्या प्रदान करने वाला है। वास्तव में हमारे वैदिक-साहित्य में पुरोहित नाम तो प्रभु का ही माना गया है। **पुरोहित बनकर के हमें ऊँची-ऊँची प्रेरणा दे रहा है।** उसको पुरोहित कहा गया है। हे प्रभु ! तू कैसा पुरोहित हैं। यह चतुर्थ प्रकार का अन्न है।

आत्मा के तीन प्रकार के अन्न हैं

तीन प्रकार का और अन्न उस देवी ने, उस देव ने, उस ममतामयी ने बेटा ! जो आत्मा को प्रदान कर दिये। उस अन्न का अभिप्राय यह है **हम नेत्रों से उस रूप का भरण करते हैं। घ्राण के द्वारा सुगन्ध, दुर्गन्ध का भरण करते हैं, श्रोत्रों के द्वारा शब्दों का भरण करते हैं। बेटा, यह आत्मा का अन्न है।** जितना यह सुन्दर पवित्र अन्न होगा उतना ही बेटा ! आत्मा बलिष्ठ होगा। जितना नेत्रों से शुद्ध पवित्र और भद्र दृष्टि हमारी रहेगी उतना ही आत्मा का बल बुद्धि को प्राप्त होता रहेगा जितना इस घ्राण से हम सुगन्ध को पान करते रहेंगे, प्राण को जानते रहेंगे, प्राण की गति को जानते रहेंगे उतना ही आत्मा बलिष्ट और बलवान होता रहेगा।

इस आत्मा के तीन प्रकार के अन्न हैं। जो प्रभु ने सृष्टि के प्रारम्भ में इस आत्मा को प्रदान किए थे। ये जो तीन प्रकार के अन्न हैं वे प्रारब्ध के आधार पर प्राप्त होते हैं। **आज हमें इनके द्वारा अपनी आत्मा को ऊँचा बनाना चाहिए।** आज हम नेत्रों से रूप का

दिग्दर्शन करते हैं, एक पुत्री का दिग्दर्शन कर रहे हैं, उसके सौन्दर्य-उसकी, प्रभु की रचना को जब दृष्टिपात करते हैं। तो यह आत्मा का बल ऊर्ध्व बनता है। यदि उस कन्या के द्वारा हमारे दूषित विचार हो जाते हैं, यदि दूषित दृष्टि बन जाती है तो उसी से **आयु सूक्ष्म** बन जाती है। दुर्विचार आते ही उसकी मानवीयता, उसका आध्यात्मिक बल सूक्ष्म होना प्रारम्भ हो जाता है। मेरे प्यारे ऋषिवर, विचार क्या कि हमें ये दैवी यज्ञ करने चाहिए। यह सात प्रकार का अन्न है जो प्रभु ने, उस ममतामयी माँ ने सृष्टि के प्रारम्भ में अपने पुत्रों को प्रदान कर दिया था। **वह जो चेतन्य देवता है वही तो मेरी माँ है, वही तो मेरी माँ वसुन्धरा है** जिसके द्वारा हमारा कल्याण होता है।

आत्मा को तथा जीवन को ऊँचा बनावें

मेरे प्यारे ऋषिवर ! आज मैं अधिक विवेचना प्रकट करने नहीं आया हूँ। विचार देने का अभिप्राय हमारा यह है कि **हम ज्योति को पान करने का प्रयास करें। उस यज्ञ को करें वह जो सप्त-जिह्वा यज्ञ है।** जो मुनिवरो ! प्रकृति को ऊँचा बनाता है, सुगन्ध को देता है, मन्दता को नहीं देता, परन्तु **वह बुद्धि को ऊर्ध्व बनाता है,** वह यज्ञ हमारे मध्य में होना चाहिए। उस यज्ञ के द्वारा हम अपने जीवन, राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाते रहते हैं।

प्रत्येक गृह में यज्ञ की अग्नि अखण्ड-भाव से जलनी चाहिए

बेटा ! अहा मैं क्या उच्चारण कर रहा था। यहाँ वेद कहता है 'यज्ञम् यज्ञा प्रथम देव ब्रह्म लोकः' कि प्रत्येक गृह में यज्ञ होना चाहिए और यह यज्ञ की जो अग्नि है, ज्योति है यह गृह आश्रम से कदापि शान्त नहीं होनी चाहिए। यह अपनी ज्योति ऊर्ध्व को प्राप्त होती रहे। जिस प्रकार मुनिवरो ! देखो, सूर्य अपने वेग में रमण करता है, अपना प्रकाश देने वाला है और उस प्रकाश में प्रत्येक मानव अपने कर्त्तव्य का पालन करता चला जाता है। आओ मेरे प्यारे ऋषिवर !

वाक्य क्या है कि **हम आध्यात्मिक यज्ञ को करने वाले बनें।** यह जो तीन प्रकार का अन्न है मानो शाब्दिक अन्न, रूप अन्न, सुगन्ध अन्न यह जो नाना प्रकार के परमाणु आते और जाते हैं, रमण करते हैं, मुनिवरो ! उनका आवागमन लगा हुआ है अहा, उसको हमें जानना चाहिए। उन्हीं परमाणुओं को जानते हुए अपनी सुन्दर यज्ञवेदी पर विराजमान होकर के उन परमाणुओं पर अनुसन्धान होना चाहिए। इसमें विस्तृतता होनी चाहिए, महत्ता होनी चाहिए।

भिन्न-भिन्न यज्ञों के भिन्न-भिन्न देवता

आज मैं उन भेदनों में नहीं जाना चाहता हूँ। विचार केवल यह है कि एक प्रकार का यन्त्र बनाया जाता था उसे सुगन्धि यन्त्र कहते हैं। उसको यज्ञ कुण्ड भी कहा जाता है। यज्ञ कुण्ड का अभिप्राय यह कि जिसमें धृत की आहुति प्रदान की जाती है। ऋषि-मुनियों ने ऐसी यज्ञशालाओं का निर्माण क्यों प्रारम्भ किया? हमारे यहाँ त्रिकोण वाली भी होती है और षटकोण की भी होती है। भिन्न-भिन्न प्रकार के देवता होते हैं। प्रत्येक यज्ञ का प्रत्येक देवता होता है। **जैसे दैवी यज्ञ का देवता गायत्री है।** गायत्री जिसे हम इन्द्र कहते हैं। इसी प्रकार **विष्णु यज्ञ का देवता शिवोप्राप्त कहा जाता है** और ब्रह्म यज्ञ है, **ब्रह्म यज्ञ का जो देवता है वह देवता 'आभा गन्धर्व' माना गया है।** आज मैं बेटा इस सम्बन्ध में अधिक विवेचना देने नहीं आया हूँ। अभिप्राय यह कि आज हमें इन यज्ञों को विचारना चाहिए। जहाँ बेटा सुगन्धि दी जाती हो, दुर्गन्ध का विनाश किया जाता हो। यह है बेटा ! भौतिक यज्ञशाला की रूप रेखा।

–पूज्यपाद गुरुदेव

॥ ओ३म् ॥

Spiritual Lights

Be blessed !

Look sages! Today again, as before, I had been revelling in the enchantment of some Ved-mantras. You must have also taken note of as to which of the Ved-mantras were recited by me today. In our culture the novel system of study and education has been recognized traditionally as holy and whole-some. The Ved-mantra which reverbarates with the man's heart beams out an extraordinary halo of glory. If the heart is not aligned with the recital of the Ved-mantra, no sense of pleasure is derived.

Today where is our Vedic recital pointing to ? Playing in tune with the subject-matter of the verses, I shall be dwelling upon those yogic thoughts, based on which our sages and seers have given out profound expressions. These expressions have been magnanimous and sublime from generations to generations. In our cultural tradition great philosophers, thinkers and austere practitioners used to sit together and deliberate upon a subject. To-day again I would like to put before you some of the views which the 'rishis' (sages) of yore used to dwell upon through years of research, experience and realization.

Once Maharishi Prabhan, Sandalya ji and Maharishi Kakari Muni Maharaj, all the three seekers of Truth, approached Maharishi Bhringi and asked, "Sir ! This species the human being is always curious to know about something or the other more and more. Why such an inquisitiveness, such a craving for knowledge remains in his bosom ? We would like to know something about this particualr craze" .

With these words of the seekers, Maharishi Bhringi, in his turn, approached Maharishi Bharadwaj because the latter

was well versed in physical sciences and also knew how to collaborate them with spiritual wisdom. In his times Maharishi Bharadwaj used to express much about voice-culture, mind and intellect in various ways. He would make great effort in collaborating physical sciences with spiritual wisdom, and it was his earnest desire to show that path to the world where both types of knowledge could go hand in hand. When that group of seekers reached his door, he said to Maharishi Bhringi,

"Welcome Maharishi Bhringi, the sage borne in Agni lineage! How have you happened to grace my place?"

Maharishi Bhringi said, "Sir! we want to know why man is ever intent to know, what is the basic reason behind it ?" There upon the rishi (Bharadwaj) observed. "The seat of intellect, which we call as 'Brahmrandra' has very fine conducting nerves which have their bearings with various worlds (the lokas) and with the five Tanmatras (subtlenesses). As a matter of fact the entire cosmos is said to have evolved out of the five 'Tan matras'. The heart of man is also like the cosmos. The cosmos is the heart of God. The various types of thought waves in man's heart, having become subtle, tend to be patent. So to say, the seeds, which were latent in the sleeping state become patent and start sprouting forth. The entire process owes its expression which to the very nature of the cosmos at large viewed microscopically, is said to be the heart of God. The cosmos is pregnant with sound vibrations. The various notes produced by the five Tanmatras permute, combine and compound themselves and impart to the cosmos an extraordinary character. Thousands of thought waves propagate in it. Vibrations of the vital force, 'Pran Shakti," animate it".

Cont.....

Pujyapad Gurudev

Yogic Wisdom of the Ancient Rishies.

Parvachan Dated 12th April, 1971

॥ ओ३म् ॥

श्रद्धा-सुमन

सर्व श्री निमगदेव त्यागी जी एवम् अभयदेव त्यागी जी निवासी ग्राम खन्द्रावली, जिला मेरठ, उ.प्र. ने अपने प्रिय भ्राता श्री नरदेव त्यागी जी की स्मृति में 5100 रु. का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए अर्पित किया है। स्व. श्री नरदेव त्यागी जी 14 अगस्त, 2011 को एक अक्समात दुर्घटना में हम सबको छोड़कर अमरावती को गमन कर गये थे। श्री त्यागी जी जन्म से ही संस्कारों के धनी थे और उनके विद्वान व विलक्षण पिता जी ने उनको ग्रामीण वातावरण में भी एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व प्रदान किया था जिसको जीवनभर ऊर्ध्वा गति में ले जाने का वह प्रयास करते रहे और उस ज्ञान को साथ-साथ परिवार व समाज की उन्नति में भी निरन्तर बांटते रहे जिसके लिये आज भी परिवार व ग्राम तथा आस पास का क्षेत्र उनकी उपस्थिति से अपने को वन्चित पाता है। समाज के समक्ष एक आदर्श जीवन की गाथा स्थापित करते हुए, दूर कहीं दूर, स्मृतियों में अपनी प्रतिभा सबके मानस पटल पर चिरकाल के लिए बना गये।

समिति परिवार के समस्त सदस्यों का सहयोग के लिए आभार प्रगट करती है और परिवार अपने को वैदिक परम्परा में सम्पन्न करते हुए सुख, शान्ति, दीर्घ आयु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि से निरन्तर बना रहे इसके लिये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

अरनव त्यागी

श्री विनोद कुमार त्यागी जी निवासी ग्राम सोहजंनी, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश ने अपने सुपौत्र प्रिय अरनव, सुपुत्र श्री मोहित त्यागी व श्रीमति पिन्की त्यागी, के जन्मदिन के शुभावसर दिनाँक 22 फरवरी, 2014 के उपलक्ष्य में 1100 रु. का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान किया है। जिसके लिये समिति हृदय से आभार प्रकट करती है।

यह परिवार पूज्यपाद गुरुदेव के साहित्य का अध्ययन करते हुए निरन्तर दैनिक याग में अपने को संलग्न रखते हुए वैदिक परम्पराओं से अपने जीवन को ऊर्ध्वा में ले जाने के लिये प्रयत्नशील है और उसी धारा को जनकल्याण के लिये भी प्रवाहित करने के लिए इस अनमोल साहित्य की प्रगति में अपनी आहुति प्रदान की है।

समिति सुपौत्र के जन्मदिवस की बारम्बार शुभकामनाएँ देते हुए समस्त परिवार के दीर्घ आयु, सुख, शान्ति एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

दान

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है :-

श्री राकेश शर्मा, पानीपत, हरियाणा	2100 रुपये
श्रीमति सूरज बती, बरनावा	505 रुपये
श्री दीपांशु, पुरालसी	50 रुपये
श्री ईश्वर सिंह, काजमपुर	50 रुपये
श्री दीपक कुमार, मोदीनगर	100 रुपये
श्री कमल सिंह, मोदीनगर	251 रुपये
श्री इंदरजीत, मोदीनगर	101 रुपये
गुप्तदान	551 रुपये
श्री जावित्री शर्मा	50 रुपये
श्री भारत कुमार, डिफेन्स एन्कलेव, मेरठ	201 रुपये
श्री महेश चंद, चीतवाना	100 रुपये
श्री बी.डी. त्यागी, मेरठ	1100 रुपये
गुप्तदान	20 रुपये
श्री आदेश शर्मा	50 रुपये
श्री सतपाल सिंह, सुपुत्र श्री भंवर सिंह, ग्राम-काकड़ा, जिला-मुजफ्फरनगर	50 रुपये
श्री रामकिशन सुपुत्र कबूल सिंह, अर्ध नगला, (बागपत)	502 रुपये
श्री कुलवीर राठी, मुजफ्फरनगर	50 रुपये
गुप्तदान	101 रुपये
श्री हरेन्द्र, सिसोली	100 रुपये
श्री किशनपाल, शिवपुरी, मोदी नगर	101 रुपये
श्री गौतम	10 रुपये
श्री मनीष त्यागी, माछरा	100 रुपये
श्री बालिष्टर त्यागी, बरनावा	100 रुपये
श्री एस.पी. चौहान, 171, श्यामपार्क, साहिबाबाद	500 रुपये
श्री विजयपाल, करनाल	100 रुपये
श्रीमति सुभद्रा	11 रुपये
श्रीमति पुष्पा	10 रुपये
श्री प्रमोद कुमार	31 रुपये

श्री कीर्ति	20 रुपये
श्रीमती कमला देशवाल पत्नी एनएस देशवाल, 37/10, तीसरा फ्लोर, ओल्ड राजेन्द्र नगर	1100 रुपये
श्री ए.एम. पांडियान, 15ए/28 डब्लू.ए. सरसवाल मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली	1000 रुपये
श्री राजाराम यादव सुपुत्र हरिद्वार, जिला-रायबरेली	101 रुपये
श्री रामनिवास त्यागी, माछरा	100 रुपये
श्री प्रवीण त्यागी	51 रुपये
श्री अरविंद कुमार, मोदीपुरम	150 रुपये
श्री दयानंद	50 रुपये
श्री सोहन लाल, 699, सेक्टर-18, फरीदाबाद, हरियाणा-121002	150 रुपये
श्री पप्पू, चितवाना, जिला-मेरठ	100 रुपये
श्री गौरव त्यागी	151 रुपये
श्री योगेश कुमार, भूनी	50 रुपये
श्री अंगूरी देवी, खीवाई	51 रुपये
श्री राजीव कुमार	112 रुपये
गुप्तदान	100 रुपये
श्री रामकिशोर त्यागी	51 रुपये
श्री हर्षित	20 रुपये
श्रीमति मधु शर्मा	500 रुपये
श्री हरिशंकर भारद्वाज, राज चोपला, मोदीनगर	200 रुपये
श्रीमति रेणु तुली, लाजपत नगर, नई दिल्ली	1101 रुपये
श्रीमति शान्ती देवी अबरोल, लाजपत नगर, नई दिल्ली	1101 रुपये
श्री कन्हैया लाल जी, सरधना	100 रुपये
श्री मास्टर फकीर चंद, चमरावल, बागपत	101 रुपये
श्री राकेश, बड़ोत	101 रुपये
श्री ब्रह्म सिंह सैनी, काकड़ा, मुजफ्फरनगर	100 रुपये
श्री कपिल शर्मा व स्वाति शर्मा, गाजियाबाद	1100 रुपये
श्री राजपाल, वानप्रस्थ	100 रुपये
श्री ओमप्रकाश त्यागी	100 रुपये
श्री जयप्रकाश कालका जी, नई दिल्ली	500 रुपये
श्री प्रताप सिंह, फफुन्डा	200 रुपये
श्रीमति कृष्णा त्यागी, रासना	101 रुपये

श्री विपिन गुप्ता, रासना	51 रुपये
श्रीमति भगवती, रासना	101 रुपये
श्रीमति कृष्णा, रासना	21 रुपये
श्री राजपाल सिंह, ओ.एच. 231, पल्लवपुरम, मेरठ	500 रुपये
श्री आर सिंह, इख्तियारपुर, मेरठ	101 रुपये
श्री बृजेश सैनी सुपुत्र श्री श्याम सिंह, करनावल	750 रुपये
श्री बबलू कुमार, बरनावा	51 रुपये
स. गमदूर सिंह रूपराय, ग्राम व पोस्ट फफूण्डा, हापुड़ रोड	150 रुपये
श्री अजय कुमार, डिफेंस कालोनी, मेरठ	51 रुपये
श्री अभिनव, डिफेंस कालोनी, मेरठ	21 रुपये
श्री मामराज मोदीनगर	50 रुपये
श्री हेमसिंह पुत्र श्री झबर सिंह, दान्दुपुर	51 रुपये
श्री आयूष, बरनावा	50 रुपये
श्रीमति उषा, सहारनपुर	100 रुपये
श्री अनमोल व अर्थव, गांगनोली	285 रुपये
श्री बाबूराम सुपुत्र श्री भुलनसिंह, करनावल	101 रुपये
श्री कमल दीप त्यागी, रासना	100 रुपये
श्री ओमकर सिंह त्यागी, अच्छेजा, हापुड़	251 रुपये
श्री ओमदत्त त्यागी व श्रीमति शकुन्तला त्यागी, तलहटा, गाजि.	1100 रुपये
श्री रमेश चन्द्र शर्मा, इकडी, मेरठ	51 रुपये
श्री धर्मबीर सिंह, काकड़ा, मुजफ्फरनगर	50 रुपये
श्री तपेश्वर, गांव-दान्दुपुर, मेरठ	50 रुपये
श्री सेवाराम शर्मा, इकडी	51 रुपये
श्री मास्टर राजलाल सिंह, भड़ल, जिला-बागपत	250 रुपये
श्री जयकरण, फफूंडा, मेरठ	15 रुपये
कु. गार्गी त्यागी D/o स्व. भानुप्रकाश जी, गांव रासना	100 रुपये
श्री मदनपाल त्यागी D/o बजीन सिंह त्यागी, गांव सठेडी	101 रुपये
श्री विनोद कुमार त्यागी सोहजनी वाले, प्रहलाद गढ़ी, गाजियाबाद	1100 रुपये
श्री प्रमोद त्यागी, मोदीनगर	100 रुपये
श्री विप्लव, बरनावा	51 रुपये
श्रीमति कमला देवी, भामोंरी	51 रुपये
श्री सुनील, राजवीर, जयपाल, ग्वासी मेरठ	150 रुपये

श्री महेश, गांव-जसर	100 रुपये
श्रीमति मंजू, जसर	20 रुपये
श्री बीरसिंह, गांव भामोंरी	100 रुपये
श्री अनिल त्यागी, बरनावा	111 रुपये
श्री अरुण त्यागी, शाहदरा	100 रुपये
श्री भिवानी त्यागी, बाड़म	50 रुपये
श्री महेश भारद्वाज, मुजफ्फरनगर	100 रुपये
श्री आर्यन, गलेहता	11 रुपये
श्री विवेक, करनावल	500 रुपये
श्री अशोक, मिलक चाकरपुर, मुरादनगर, गाजियाबाद	100 रुपये
श्री सुशील कुमार, हररा	50 रुपये
श्री निगमदेव त्यागी, देवप्रिय त्यागी सुपुत्र अभयदेव त्यागी, एल-431, शास्त्री नगर, मेरठ, उ.प्र.-250004	5100 रुपये
श्रीमति कलावती, भारसी	200 रुपये
श्री कृष्णदत्त त्यागी, पूठ्ठी मेरठ	101 रुपये
श्री अरुण त्यागी, झडीना	101 रुपये
श्रीमति शारदा त्यागी, बाम	500 रुपये
श्री विनोद, पुर	101 रुपये
श्री अशोक, छोटा सेनपुर	21 रुपये
श्री पवन कुमार सिरोही, सर्वोदय कालोनी, हापुड़	1100 रुपये
श्री सलेख चंद, बरनावा	50 रुपये
श्री रामपाल, बरनावा	50 रुपये
श्री चन्द्रशेखर त्यागी, ग्राम-मकनपुर, जिला-गाजियाबाद	100 रुपये
श्री जसपाल जी, सैन्यपुर, जिला-मुजफ्फरनगर	500 रुपये
श्री सुशील कुमार, ग्राम-मार्णा मुजफ्फरनगर	500 रुपये
श्री योगेन्द्र जी, बुलन्दशहर	500 रुपये
श्री रोहताश आर्य, मण्गवला मवाना	51 रुपये
श्री मुरारी जी, बिनौली	50 रुपये
श्री छगन लाल जी, 381, ग्राम धनौरा, हापुड़	2100 रुपये
श्री प्रेमपाल जी, भदोड़ा	51 रुपये
श्री यादराम जी सुपुत्र बलजीत सिंह, ग्राम-भामोंरी, सरधना, मेरठ	100 रुपये
श्री संजय त्यागी, बरनावा	100 रुपये

श्री सुरेश चन्द शर्मा, खरखौदा, मेरठ	100 रुपये
श्री सुधीर बालियान, रसूलपुर, जारान, मेरठ	80 रुपये
श्री संजय त्यागी, बरनावा	100 रुपये
श्रीमति बृजबाला त्यागी, मकनपुर, गाजियाबाद	1100 रुपये
श्रीमति कान्ता देवी, मुजफ्फरनगर	50 रुपये
श्री चन्द्रभानजी, सुन्दरनगर	101 रुपये
श्री एस.आर. भांभरी, चंडीगढ़	250 रुपये
श्री जीत सिंह, धुन्धली, बिजनौर	100 रुपये
श्री सौदान शास्त्री, बरनावा	100 रुपये
श्री बीरोचना, रासना, मेरठ	100 रुपये
श्रीमति माता जी, रासना	100 रुपये
श्री बाल किशन त्यागी, 30/1, जागृति विहार, मेरठ	200 रुपये
श्री मंजीत त्यागी, रहदरा	50 रुपये
श्री दीपक शर्मा, धनौरा	100 रुपये
मा. ओमदत्त त्यागी, धनौरा	201 रुपये
श्री जीतेन्द्र सिंह	101 रुपये
श्रीमति बाला तोमर, दिल्ली गेट, दिल्ली	1100 रुपये
श्री जय नारायण कौशिक, दिल्ली	200 रुपये
श्री हरिराम गुप्ता, दिल्ली (चैक से मासिक सहयोग)	5100 रुपये
श्री राजेश्वर त्यागी, पिलाना	100 रुपये
श्री जोगेन्द्र जी परमाल, करनाल	200 रुपये
श्री सतपाल सिंह, ठनाल जिला-शामली	50 रुपये
श्री योगेन्द्र विश्नोही, सरधना, मेरठ	15 रुपये
श्री दर्शन दयाल, दिल्ली	100 रुपये
श्री प्रेम गुलाठी, दिल्ली	100 रुपये
श्री कालराम त्यागी, दिनकरपुर	1100 रुपये
श्री सघरा, जिवाना	101 रुपये
श्री ओमप्रकाश वैद्य जी, पलड़ा वाले	500 रुपये
श्री हरिराम गुप्ता जी, कैसर स्टील वजीरपुर, दिल्ली (मासिक सहयोग)	6000 रुपये

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और उनको परिवार सहित जीवन में सुख, शान्ति व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	50.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	50.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	50.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	50.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	30.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
13.	देवपूजा	20.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	110.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	110.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	100.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	25.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	40.00
22.	महाराजा-रघु का याग	25.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	25.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	30.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	30.00
29.	याग-मन्जूषा	25.00
30.	आत्म-दर्शन	25.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	25.00
32.	याग और तपस्या	45.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	25.00
35.	याग-चयन	25.00
36.	दिव्य-रामकथा	110.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	25.00
38.	दिव्य-ज्ञान	35.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	25.00
41.	आत्म-उत्थान	30.00
42.	तप का महत्व	30.00
43.	अध्यात्मवाद	25.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	35.00
45.	वैदिक-प्रभा	30.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	30.00
50.	आत्मा का भोजन	35.00
51.	साधना	30.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	60.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	60.00
57.	माता मदालसा	40.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	60.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	65.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	70.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम्, कर्म भूमि लाक्षागृह	10.00

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला बागपत, (उ.प्र.)। दूरभाष : 01234 240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। दूरभाष : 0131 2606414
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष : 011-26498737
5. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष : 0120-4165802
6. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) दूरभाष : 9410452076
7. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) दूरभाष : 09412139333
8. श्री विवेक त्यागी, 16ए अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष : 0122-2316196
9. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष : 0120-2642052
10. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110ए मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) दूरभाष : 9899228860, 9871367937
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। दूरभाष : 9910589486
12. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) दूरभाष : 9313530505
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-23282088
14. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
15. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष : 011-23977216
16. जवाहर बुक डिपो, बुढ़ाना गेट, आर्य समाज मेरठ शहर (उ.प्र.)।

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री विवेक त्यागी, अल्कापुरी, हापुड़	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री वी.पी. सिंह, वसुंधरा, गाजियाबाद	250 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्रीमती शशि गुप्ता, नोएडा	125 रुपये
डॉ. ओ.पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़।	100 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मास्टर कवन्धी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये

वैदिक अनुसन्धान समिति के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 100 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मंत्री
   ए-59, पंचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-26498737
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : www.contact@shringirishi.in

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

विधाता ! आज हम भी अपना प्रदर्शन कर रहे हैं। हम भी अशान्ति में हैं। हमें शान्ति नहीं मिल रही है। परन्तु मनुष्य को अपनी मर्यादा कदापि भी शान्त नहीं करनी चाहिए। यह मर्यादा वह पदार्थ है जिसको त्यागने से यह संसार अशान्ति को प्राप्त हो जाता है। जब मर्यादा में चलता है तो उस समय शान्ति को ग्रहण करने वाला बन जाता है। जैसे मुनिवरो, अग्नि मर्यादा में रहती है तब तक वह संसार के लिए लाभदायक होती है, और जब मानव अग्नि को मर्यादा से पृथक् कर देता है तो उसी काल में वह संसार का विनाश करने वाली बन जाती है।

–पूज्यपाद गुरुदेव

वर्ष 42 : अंक : 499
अप्रैल 2014

मूल्यः
दस रुपये

प्रकाशक, मुद्रक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश (प्रकाशन मंत्री वै.अ.स.) द्वारा वैदिक अनुसंधान समिति पंजी०
के लिए नवप्रभात प्रिंटिंग प्रैस, दिल्ली से छपवाकर सी-38,
शिवालिक मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से प्रकाशित।
(अवै०) सम्पादक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश, दूरभाष : 26498737

POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-04-2014
Published on 5th day of the same month